Toppersnotes®
Unleash the topper in you

SET

State Eligibility Test

राज्य पात्रता परीक्षा

हिन्दी साहित्य

पेपर – 2 || भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

इकाई - 1

हिन्दी भाषा और उसका विकास 1-38

- हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- हिन्दी का भौगोलिक विस्तार
- हिन्दी के विविध रूप
- हिन्दी का भाषिक स्वरूप
- हिन्दी भाषा - प्रयोग के विविध रूप
- देवानागरी लिपि

इकाई - 2

हिन्दी साहित्य का इतिहास 39-197

- रासो-साहित्य
- भक्तिकाल
- रीतिकाल
- आधुनिक काल
- द्विवेदी युग
- छायावाद
- प्रगतिवादी काव्य
- प्रयोगवाद और नई कविता

इकाई - 1
हिन्दी भाषा और उसका विकास

हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- विश्व की भाषाओं की संख्या को लेकर विद्वान विभक्त हैं। सामान्यत इनकी संख्या 2796 से 3000 के बीच मानी जाती है।
- संसार की सभी भाषाओं का अध्ययन दो प्रकार के वर्गीकरण के तहत् किया जाता है -
  1. आकृतिमूलक वर्गीकरण
  2. पारिवारिक वर्गीकरण
- विश्व में भाषा परिवारों की संख्या को लिखकर विभिन्न मत हैं
  - भोलनाथ तिवारी और फॉन हुम्बोल्ट ने भाषा परिवारो की संख्या 13 मानी है। वही फ्रिडीश म्यूलर ने इनकी संख्या 100 मानी है।
  - निर्विवादित रूप से चार भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत 18 भाषा परिवारों को महत्व दिया गया है।
    1. यूरेशिया (यूरोप-एशिया)
    2. अफ्रीका भूखंड
    3. प्रशांत महासागरी भूखण्ड
    4. अमेरिका भूखण्ड

भारोपीय परिवार

- भारोपीय परिवार के अन्य नाम हैं - इण्डो जर्मेनिक, भारत-हिती परिवार, आर्य-परिवार
- ध्वनिक आधार पर भारोपीय परिवार की 10 शाखाओं को 'शतम्' व केन्तुम दो भागों में बाँटा गया है।
- भारत - ईरानी के तीन वर्गों का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है
  1. ईरानी
  2. दरद
  3. भारतीय आर्यभाषा

भारतयी आर्य भाषा के चरण

1. प्राचीन आर्यभाषा (2000 ई. पू. - 500 ई. पू.) { वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत }
2. मध्यकालीन आर्यभाषा (500 ई.पू.- 1000 ई.) → { पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा अवहट्ट }
3. आधुनिक आर्यभाषा -(1000 ई. - अब)- हिन्दी, बांग्ला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी।

पालि – मध्यकालीन आर्यभाषा की प्रथम अवस्था

- 'पल्लि' से पालि शब्द की व्युत्पत्ति हुई। पल्लि का अर्थ है ग्राम। इस प्रकार पालि का अर्थ होता है ग्रामीण भाषा।
- पालि शब्द की उत्पत्ति 'पाटलीपुत्र' से भी मानी जाती है जिसका अर्थ 'मगध की भाषा'।
- पालि शब्द का सम्बन्ध पंक्तियों से माना गया है। बुद्ध वचनों में जो पक्तियाँ प्रयुक्त की गई है उन्हें पालि कहा जाता है।
- कुछ विद्वान पालि को बौद्ध साहित्य को पालने वाली या रक्षा करने वाली भाषा मानते है।
  बौद्ध धर्म से संबधित ये तीना महत्वपूर्ण ग्रंथ पालि में है –
  1. सुत पिटक
  2. विनय पिटक
  3. अभिधम्म पिटक
- विसुद्धिमग्ग को बौद्ध सिद्धान्तों का कोश भी कहते है, इसे सुसन्धिकप्प और कच्चान गंध भी कहा जाता है, यह पालि का सर्वश्रेष्ठ व्याकरण माना जात है।

पालि की विशेषताएँ

- कच्चायन के अनुसार पालि में 41 ध्वनियां है जिनमें 8 स्वर तथा 33 व्यंजन है।
- मांगुलान के अनुसार पालि में ध्वनियों की संख्या 43 है जिनमें 10 स्वर तथा 33 व्यंजन है।
- संयुक्त व्यंजनों में भी अत्यधिक परिवर्तन हुए क्योंकि संस्कृत की जटिलता का एक बडा कारण यही है। सरलीकरण के प्रयासों में संयुक्त व्यंजनों का रूप परिवतन होना स्वाभाविक ही था।
- पालि में संस्कृत के नपुंसक लिंग था द्विवचन का भी लोप है।

शब्दकोशीय प्रवृत्तियाँ

- पालि की शब्द संपद का मूल – आधार स्वाभाविक रूप से तद्भव शब्द है।
- स्थानीय व देशज शब्दों का विकास तेजी से हुआ। यथा- धण (स्त्री), बप्प (पिता)।

प्राकृत भाषा

- प्राकृत का 1 ई. से 500 ई. माना जाता है।
- प्राकृत के विकास की अवस्थाओं को किशोरी दास वाजपेयी आदि वैयाकरणों ने तीन चरणों में बाँट कर देखा है –
  - <u>प्रथम प्राकृत</u> प्राकृत एक जनभाषा रही है। जो प्राचीन प्रचलित जनभाषा है।
  - <u>द्वितीय प्राकृत</u> कुछ विद्वान ऐसा मानते है कि संस्कृत भाषा के सरलीकरण के कारण प्राकृत भाषा बनी। इसे 'साहित्यिक प्राकृत' भी कहते है।
  - <u>तृतीय प्राकृत</u> प्राकृत के बाद की भाषा अपभ्रंश को कुछ विद्वान तृतीय प्राकृत भी कहते है।
    - प्रथम अवस्था – पालि
    - द्वितीय अवस्था – प्राकृत
    - तृतीय अवस्था – अपभ्रंश

प्राकृत की विशेषताएँ

- प्राकृत की ध्वनि संरचना पालि के समान ही है
- पालि में 'य' व्यंजन का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होता था, जबकि प्राकृत में प्रायः 'य' के स्थान पर 'ज' प्रयुक्त होने लगा (यश >जस)
- क्षतिपूरक दीर्घीकरण संस्कृत से हिन्दी के विकास में सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। प्राकृत का योगदान यह है कि उसी स्थिति में यह प्रक्रिया दिखाई देने लगी।

अपभ्रंश – मध्यकालीन आर्यभाषा की तीसरी अवस्था

- अपभ्रंश मध्यकालीन और आधुनिक आर्य – भाषाओं की कडी है।
- अपभ्रंश को अवहंस, ग्रामीण भाषा, देशी भाषा, आभीरी, आभीरोक्ति आदि भाषाओं से जाना जाता है।
- वाक्यपदीयम् में भर्तृहरि ने बताया कि सर्वप्रथम व्यादि ने संस्कृत के मानक शब्दों से भिन्न 'संस्कार च्यूत' भ्रष्ट और अशुद्ध शब्दों को अपभ्रंश कहा है। व्यादि का ग्रंथ लक्षश्लोकात्मक संग्रह अनुपलब्ध है।
- डॉ. उदयनारायण तिवारी व भोलानाथ तिवारी के अनुसार अपभ्रंश शब्द का भाषा के अर्थ में प्रयोग सर्वप्रथम चण्ड ने अपने ग्रन्थ प्राकृत लक्षण में किया।
- धनपाल द्वारा रचित 'भविस्यत कहा' अपभ्रंश का प्रथम प्रबंध काव्य है। डॉ. याकोबी ने इसका सम्पादन किया था।

  नगर – गुजरात की बोली
  उपनागर – राजस्थान की बोली
  ब्राचड – सिंध की बोली
- डॉ. हरदेव बाहरी ने 7वीं शती से 11वीं शती तक के समय को अपभ्रंश का स्वर्ण काल कहा है।

अवहट्ट

- अवहठ भाषा का समय 900 ई. से 1100 ई. तक निश्चित किया गया है।
- सुनीति कुमारी चटर्जी के अनुसार अवहट्ट भाषा अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच की कडी मानी जाती है।
- अवहट्ट शब्द का प्रथम प्रयोग वर्णारत्नाकर में मिलता है।
- विधापति ने 'कीर्तिलता' की भाषा को अवहट्ट कहा है।

पुरानी/प्रारंभिक हिन्दी

- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने परवर्ती अपभ्रंश को ही पुरानी हिन्दी कहा है।
- शुद्ध खडी बोली के प्रारम्भिक नमूने खुसरों की शायरी में प्राप्त होते है।
- हरदेव बाहरी ने लिखा "अतः हम डॉ. माता प्रसाद गुप्त और कैलाशचन्द्र भाटिया के विचार से सहमत है कि रोड कवि कृत राउलवेल एकमात्र ऐसी कृति है जिसमें एक भाषा के लक्षण मिलते है।"
- अवधी खडी बोली और दक्खिनी, किसी का भी एक भाषी ग्रंथ 1250 ई. से पहले उपलब्ध नहीं है और यही तीन भाषाएँ है जिनकी परम्परा आगे चली है।

- सर्वप्रथम 1880 ई. में आधुनिक आर्यभाषाओं का वर्गीकरण हार्नले ने किया –
  1. पूर्वी गोडियन – पूर्वी हिन्दी, बंग्ला, असमी, उडिया
  2. पश्चिमी गोडियन – राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी
  3. उतरी गोडियन – गढ़वाली, नेपाली, पहाडी
  4. दक्षिणी गोडियन – मराठी
- हार्नले ने मध्य देश तथा केन्द्र के आर्य को भीतरी आर्य और चारों और फेले आर्य को बाहरी आर्य कहा ।

जॉर्ज ग्रियर्सन का 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में प्रदत्त वर्गीकरण
बाहरी उपशाखा • उत्तरी पश्चिमी समुदाय – (i) लहँदा (ii) सिंधी • दक्षिणी समुदाय – (i) मराठी • पूर्वी समुदाय – (i) उडिया (ii) बिहारी (iii) बंगला (iv) असमिया मध्य उपशाखा • मध्यवर्ती समुदाय – (i) पूर्वी हिंदी भीतरी उपशाखा • केंद्रीय समुदाय – (i) पश्चिमी हिंदी (ii) पंजाबी (iii) भीरनी (iv) राजस्थानी (v) खानदेशी (vi) गुजराती • पहाडी समुदाय – (i) पूर्वी पहाडी (नेपाली) (ii) मध्य पहाडी केंद्रीय पहाडी (iii) पश्चिमी पहाडी

- डॉ सुनीति कुमार चटर्जी ने ध्वनि व व्याकरण को आधार बनाकर गियर्सन के वर्गीकरण की आलोचना की है और आपना वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है –
  - उदीच्य – सिंधी, लहदाँ, पंजाबी
  - प्रतीच्य – राजस्थानी, गुजराती
  - मध्यदेशीय – पश्चिमी हिन्दी
  - प्राच्य – पूर्वी हिन्दी, बिहारी, असमिया, बंगला उडिया
  - दक्षिणात्य – मराठी

भोलानाथ तिवारी का अपभ्रंश आधारित वर्गीकरण	
अपभ्रंश	आधुनिक निर्मित भाषाएं
ब्राचड-पैशाची (पश्चिमोत्तरी) शौरसेनी (मध्यवर्ती) अर्धमागधी (मध्यपूर्वीय) मागधी (पूर्वीय) महाराष्ट्री (दक्षिणी)	लहँदा, पंजाबी, सिंधी, पश्चिमी हिंदी राजस्थानी, पहाडी, गुजराती पूर्वी हिंदी बिहारी, बंगाली, उडिया, असमिया मराठी

हरदेव बाहरी का वर्गीकरण	
हिंदी वर्ग	मध्य पहाडी, राजस्थानी, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, बिहारी हिंदी
हिंदीतर (अ-हिंदी) वर्ग	उत्तरी-नेपाली द्य पश्चिमी - पंजाबी, सिंधी, गुजराती दक्षिणी - सिंहली, मराठी पूर्वी - उडिया, बंगला, असमिया

- हिन्दी की प्रमुख बोलियों के नामकरणकर्ता –

बोली	नामकरणकर्ता
कौरवी	राहुल सांकृत्यायन
राजस्थानी (भाषा)	ग्रियर्सन
डिंगल	बांकीदास
ब्रजबुलि	ईश्वरचन्द्र गुप्त
बिहारी	ग्रियर्सन
भोजपुरी	रेमण्ड
मैथिली	कोलब्रुक

<u>'राजस्थानी हिन्दी' उपभाषा</u>

- यह राजस्थान, मालवा जनपद और सिंध के कुछ क्षेत्रों तक फैली है जिसे 4 करोड के करीब लोग बोलते हैं ।
- राजस्थानी हिन्दी उपभाषा 'ट' वर्ग बहुला उपभाषा है । मराठी में प्रयुक्त 'ठ' ध्वनि भी इसमें प्रयुक्त होती है ।
- इसमें पुल्लिंग एकवचन शब्द प्रायः ओकारान्त होते हैं ।
- पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन में अंत में 'आँ' का प्रयोग होता है ।
- राजस्थानी हिन्दी भाषा के अंतर्गत 4 बोलियाँ आती हैं ।
  1. मारवाडी
  2. मेवाती
  3. मालवी
  4. जयपुरी

<u>'बिहारी हिन्दी' उपभाषा</u>

- इस उपभाषा में तीन प्रमुख बोलियाँ आती हैं –
- भोजपुरी, मगही और मैथिली
- बिहारी हिन्दी उपभाषा की सबसे अधिक बोले जानेवाली बोली भोजपुरी है ।
- बिहारी हिंदी उपवर्ग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बोली है ।
- लोक प्रचलन की दृष्टि से यह हिन्दी की सबसे बडी बोली है ।
- भारत के बाहर मॉरिशस, फिजी आदि देशो में यह अत्यधिक प्रचलित है ।
- भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का 'शेक्सपियर' कहा जाता है । उन्होंन 'बिदेसिया' सहित बारह नाटकों की रचना की है ।

'पहाडी हिन्दी' उपभाषा

- पहाडी हिंदी उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों मुख्यतः कुमाऊँ तथा गढ़वाल में बोली जाती है ।
- 'पहाडी हिन्दी' पर आर्यभाषा संस्कृत, तिब्बती चीनी तथा ,खस का भी प्रभाव रहा है । इसकी साहित्यक परम्परा नहीं मिलती है ।
- इस उपवर्ग की बोलियों में सानुनासिक स्वरों की प्रधानता है ।
- इसकी बोलियाँ प्रायः ओकारांत हैं, यथा – घोडो कालो, चल्यों आदि ।
- 'पहाड' हिन्दी' के अंतर्गत दो बोलियाँ आती हैं – कुमाऊँनी और गढ़वाली ।

'पूर्वी हिन्दी' उपभाषा

- पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ तक फैला हुआ है ।
- प्राचीन समय में जिस क्षेत्र को उत्तरी कोसल तथा दक्षिण कोसल कहा जाता था, वही क्षेत्र पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र है ।
- इसकी सीमाओं का निर्धारण कानपुर से मिर्जापुर तथा लखीमपुर से बस्तर तक किया जाता है ।
- 'पूर्वी हिन्दी' के अन्तर्गत तीन बोलियाँ हैं – अवधी, बघेली और छत्तीसगढी ।

'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा

- 'पश्चिमी हिन्दी' हिन्दी भाषा का सबसे बडा उप वर्ग है । जिसका क्षेत्र अंबाला से कानपुर तक तथा देहरादून से महाराष्ट्र के आरम्भ तक विकसित है । इसकी बोलिया निम्नलिखित हैं –

ब्रजभाषा

- ब्रज का अर्थ है – 'पशुओं या गायों का समूह' या चरागाह। पशुपालन की अधिकता के कारण यह क्षेत्र ब्रज कहलाया और इसकी बोली ब्रजभाषा ।
- ब्रज या ब्रजी एक बोली होने पर भी मध्ययुग में हिंदी प्रदेश से बाहर पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों में इसका प्रयोग हुआ और व साहित्य रचा जाता रहा, इस कारण भाषा शब्द ब्रज के साथ जुड गया और 'ब्रजभाषा' शब्द बना ।
- इस बोली का आरंभिक रूप आदिकालीन साहित्य में पिंगल तथा मध्यकाल में 'भाखा' नाम से मिलता है ।
- भूक्सा, अंतर्वेदी, भरतपुरी, डांगी, माथुरी आदि ब्रजभाषा की मुख्य उपबोलियाँ हैं ।
- बंगाली कवि ईश्वरचन्द्र गुप्त ने ब्रजबुलि शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था ।
- ब्रजभाषा का विकास तीन कालों में विभाजित किया गया है ।
- आरंभ से 1525 ई. तक आदिकाल, 1525 से 1800 ई. तक मध्यकाल और 1800 ई. से अबतक 'आधुनिक काल' खडी बोली ।
- खडी बोली का दूसरा नाम कौरवी है। 'कौरवी' का प्रयोग राहुल सांकृत्यायन ने किया था ।
- बीम्स, सुनीति कुमार चटर्जी, धीरेंद्र वर्मा आदि भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार खडी बोली का आधार कौरवी है ।
- खडी बोली मानक हिंदी का आधार कोलबुक ने 'कन्नौजी' को माना, इस्टाविक तथा मुहम्मद हुसैन ने 'ब्रजभाषा' को माना और मसऊद हसन खाँ ने 'हरियाणी' को माना है ।

विद्वानों के अनुसार खडी बोली का अर्थ	
विद्वान	खडी बोली का अर्थ
सुनीति कुमार चटर्जी कामताप्रसाद गुरु गिलक्राइस्ट किशोरीदास वाजपेयी अन्य भाषा वैज्ञानिक	'सीधी' 'कर्कश' गँवारू खडी 'पाइ' से संबंधित खरी या शुद्ध

- वर्तमान हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी और दक्खिनी कुछ सीमा तक खडी बोली पर आधारित हैं।

बुंदेली

- बुंदेली बुंदेल खंड की बोली है। बुंदेलखंड नाम बुंदेला राजपूतों के आधिपत्य के कारण पडा।
- भू-भाग की व्यापकता की दृष्टि से बुंदेली पश्चिमी हिंदी की सबसे व्यापक बोली है।
- बुंदेली में लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में है। 'ईशुरी के फाग' बहुत प्रसिद्ध है।
- 'आल्हा' एक प्रसिद्ध लोकगाथा है, जिसे बुंदेली की ही एक उपबोली 'बनाफरी' में लिखा गया था।
- धीरेंद्र वर्मा मानते हैं कि 'बुंदेली', कन्नौजी के समान ही ब्रज की एक उपबोली है।
- इसके उच्चारण में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे- आधा झ आदा, दूध झ दूद आदि।
- वर्तमान हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी और दक्खिनी कुछ सीमा तक खडी बोली पर आधारित हैं।
- बुंदेली बुंदेल खंड की बोली है। बुंदेलखंड नाम बुंदेला राजपूतों के आधिपत्य के कारण पडा।
- भू-भाग की व्यापकता की दृष्टि से बुंदेली पश्चिमी हिंदी की सबसे व्यापक बोली है।
- बुंदेली में लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में है। 'ईशुरी के फाग' बहुत प्रसिद्ध है।
- 'आल्हा' एक प्रसिद्ध लोकगाथा है, जिसे बुंदेली की ही एक उपबोली 'बनाफरी' में लिखा गया था।
- धीरेंद्र वर्मा मानते हैं कि 'बुंदेली', कन्नौजी के समान ही ब्रज की एक उपबोली है।
- इसके उच्चारण में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे- आधा झ आदा, दूध झ दूद आदि।

कन्नौजी

- कन्नौजी शब्द संस्कृत के कान्यकुब्ज शब्द से विकसित हुआ है। (कान्यकुब्ज → कण्णउज्ज → कन्नौज)
- कुछ विद्वान कन्नौजी को ब्रजभाषा का ही रूप मानते हैं। ग्रियर्सन ने इसे अलग बोली माना है।
- कन्नौज जनपद का पुराना नाम पांचाल था।
- इस बोली में मध्यम 'ह' का लोप हो जाता है, जैसे- जाहि झ जाइ, करहु झ करउ आदि।
- हिंदी की अंतिम महाप्राण ध्वनि का यहाँ अल्पप्राणीकरण हो जाता है, जैसे- हाथ > हाँत आदि।
- कन्नौजी में अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति अत्यधिक मात्रा में मिलती है, जैसे- बात > बाँत आदि।

हरियाणी (हरियाणवी)

- इसका मूल संबंध हरियाणा राज्य से है। ग्रियर्सन ने इसे बांगरु कहा। धीरेंद्र वर्मा ने हरियाणी को स्वतंत्र बोली नहीं माना और खडी बोली का ही एक रूप माना है।
- हरियाणी को 'जाटू' भी कहते हैं।
- हरियाणी में 'लोक साहित्य' पर्याप्त मात्रा में है।

दक्खिनी

- दक्खिनी हिंदी का अन्य नाम है- दकनी, देहलवी, हिन्दवी, गूज़री ।
- हैदराबाद में दक्खिनी हिंदी का एक विशिष्ट रूप प्रचलित है जिसे ष्हैदराबादी हिंदीश कहा जाता है।
- 'गूज़री' इसका वह रूप है जो गुजरात के कवियों के साहित्य में प्रयुक्त है, यथा- मुहम्मद शाह कादिरी के काव्य में ।
- दक्खिनी हिंदी के प्रमुख स्थान आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व मद्रास हैं ।
- दक्खिनी हिंदी की मुख्य उपबोलियाँ हैं- गुलबर्गी, बीदरी, बीजापुरी, हैदराबादी ।
  - ➢ दक्खिनी हिंदी की विशेषताएँ
- खडी बोली के सभी स्वर दक्खिनी हिंदी में मिलते हैं ।
- खडी बोली के सभी व्यंजन इसमें भी मिलते हैं । इनके अतिरिक्त, श्गश तथा श्फश जैसी ध्वनियाँ अत्यधिक मात्रा में दिखाई देती हैं ।
- ड के स्थान पर ड प्रयोग करने की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे- पडा > पडा आदि ।
- महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण काफी ध्वनियों में दिखाई देता है, जैसे- मूरख > मूरक, मुझे > मुजे, धोखा > धोका आदि ।
- कहीं-कहीं अल्पप्राण ध्वनियों का महाप्राणीकरण भी होता है। उदाहरण के लिये- पलक > पलख, पहचान > पछान आदि ।
- एक शब्द की विभिन्न ध्वनियों के विपर्यय की प्रवृत्ति दक्खिनी की एक प्रमुख विशेषता है। उदाहरण के लिये लखनऊ > नखलऊ, कीचड > चीकड, मतलब > मतबल आदि ।
- सर्वनाम व्यवस्था इस प्रकार हैउत्तम पुरुष- मेरे., हमन, मंज, मुज मध्यम पुरुष- तुज, तुमें, आपहिं अन्य पुरुष- उनन, उनने अन्य सर्वनाम- जित्ता, जित्ती, उत्ता, उत्ती ।
- क्रिया व्यवस्था के प्रमुख प्रयोग इस प्रकार हैं वर्तमानकाल- अहै, है, हैं. हूँ. हैगा भूतकाल- कह्या, बोल्या, था, थ्या भविष्यकाल- होगा, होंगे, होंगी, चलसी, चलासुं ।
- भूतकाल की क्रियाओं में 'यकर' प्रत्यय का प्रयोग भी काफी मात्रा में होता है, जैसे- आकर > आयकर, रोकर > रोयकर आदि ।
- दक्खिनी हिंदी में आरंभिक काल में खडी बोली की शब्दावली ही सर्वाधिक प्रचलित रही। इसमें फारसीकरण की प्रवृत्ति बढती गई। इसके अतिरिक्त, मराठी, तेलुगू और कन्नड के स्थानीय शब्द भी सीमित मात्रा में शामिल होते गए ।

हिंदुस्तानी

- हिंदुस्तानी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- 'हिंदुस्तान + इ' ।
- धीरेन्द्र वर्मा, ग्रियर्सन आदि विद्वानों का मत है कि यह नाम अंग्रेजों ने दिया है ।
- 'तुजुक-ए-बाबरी' में भाषा के अर्थ में हिंदुस्तानी शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रारंभ में यह शब्द 'हिंदी' या 'हिंदवी' का समानार्थी था, किंतु आगे चलकर इसका वह अर्थ हो गया जो आज उर्दू का है ।
- हिंदुस्तानी में तद्भव तथा बहुप्रचलित संस्कृत तत्सम और अरबी-फारसी के वे शब्द होते हैं, जो बोलचाल में भी प्रयुक्त होते हैं ।

खडी बोली, ब्रजभाषा तथा अवधी की तुलना				
अंतर का आधार		खडी बोली	ब्रजभाषा	अवधी
उद्भव		शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से	शौरसेनी अपभ्रंश से	अर्धमागधी अपभ्रंश से
उपभाषा वर्ग		पश्चिमी हिंदी का प्रतिनिधि रूप	पश्चिमी हिंदी से संबद्ध पर अवधी से अत्यन्त निकटता	पूर्वी हिंदी उपभाषा का प्रतिनिधि रूप
भौगोलिक विस्तार		मेरठ केंद्र है । दिल्ली से देहरादून तक तथा अम्बाला से हिमाचल के आरंभ तक का संपूर्ण क्षेत्र ।	ब्रजमंडल का संपूर्ण क्षेत्र। मूलतरू मथुरा, वृंदावन, आगरा में प्रयुक्त। हरियाणा का भी कुछ भाग, जैसे- पलवल, होडल इत्यादि ।	लखनऊ, फैजाबाद, अयोध्या, सीतापुर सुल्तानपुर, रायबरेली तथा आसपास का क्षेत्र। विदेशों में भी प्रयुक्त- फिजी. त्रिनिदाद आदि में ।
साहित्यिक विकास		19वीं सदी से पूर्व विशेष नहीं- सिद्ध, नाथ, खुसरो, रहीम, संत काव्य, दक्खिनी हिंदी में आरंभिक रूप; 19वीं सदी से तीव्र आरंभ- अब कोई प्रतिस्पर्धा नहीं। मानक हिंदी का मूल आधार।	। आदिकाल में 'पिंगल' की परंपरा में उपस्थित-रू. प्राकृत पैंगलम, उक्तिव्यक्तिप्रकरण, पृथ्वीराज . रासो में आरंभिक रूप नाथ साहित्य व खुसरो की कविताओं में भी द्रष्टव्य। सूरदास रीतिकाल → अखिल भारतीय साहित्यिक भाषा → सबसे लंबा इतिहास ।	राउलवेल, उक्तिव्यक्तिप्रकरण मेंद्य आरंभिक रूप → पुनः सूफियों के बाद ही → सूफी काव्यधारा → रामकाव्यधारा द्य → हिंदू प्रेमाख्यानकार → अभी भी कुछ - कवि → बलभद्र प्रसाद दीक्षित आदि।
ध्वनि व्यवस्था	उच्चारण की प्रवृत्ति	आकारांतता (चला, गया)	ओकारांतता (चलो, गयो)	उकारांतता (चलु. कहतु)
	ऐ, औ का उच्चारण	। ए, ओ की तरह (औरत > ओरत)	सामान्य रूप में (आवैं, जावों)	संध्यक्षरों के रूप में (चउडा, आवइ)
	प्रारंभिक स्वर	लुप्त होते हैं (इकट्ठा > कट्ठा) (सियाना > स्याणा)	सामान्य रूप में	सामान्य रूप में

	ध्वनियों का परिवर्तन	नझ ण (मानस झ माणस) ल >ळ (बालक > बाळक) र >ड (चपरासी झ पडासी) श झ स (शमशेर झ समसेर)	रझ ड (परे झ पडे) ण झन (बाण > बान)	णझन (कौण झ कौन) (बाण > बान) ड > र (सडक > सरक) ष > स (ऋषि झ रिसि) व > ब (विश्व >बिस्व)
	अल्पप्राण – महाप्राण	अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति (धोखा झ धोका), (झूठ झ झूट)	अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति (मुझ > मुज)	- - - - - - -
व्याकरण	संज्ञा	संज्ञा का एक रूप (प्रायः आकारां)	संज्ञा का एक रूप	संज्ञा के तीन रूप मिलते हैं, जैसे- • लरिका-लरिकवा-लरिकउना • नदी-नदिय- नदीवा
	सर्वनाम उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष अन्य पुरुष अनिश्चयवाचक	एकवचन बहुवचन मैं, मुज, में म्हारा, हमारा तू, तैं, तम तम, थारा, तारा वो, वू, उस्का वे, उन्का, उन्की कोण, कूण, किस्का	एकवचन बहुवचन मैं, हौं, मोहिं, मेरौ हम, हमन, हमारौ तू, तू, तोहि, तेरौ, तिहारो तुम, तुम्हें, तुम्हारो, वौ, वह, वाकी, ताहि वे, वै, उन, उनको कैसो, कौन	एकवचन बहुवचन में, मह, मो हम, हमहिं, हमार घ तू, तँ. तोर तुम, तुम्ह, तुम्हार, तुहार वह, ऊ, ओकर वेह, ओनकर, ओनका घ कवन, कउन, कइसो
	लिंग व्यवस्था	स्त्रीलिंग के लिये ई, अन, नी प्रत्यय प्रमुख- शेर > शेरनी, माली > मालन, जाट झ जाटनी, अहीर | > अहीरन	स्त्रीलिंग के लिये ई, इया, आइन तथा आनी प्रत्यय- गोरी, ललाइन, देवरानी, अखियाँ/ बिटिया। कहीं-कहीं नपुंसकलिंग का प्रयोग भी, जैसे- सोना झ सोनो।	प्रायः इया परसर्ग (बिटिया) ई, इनि, इनी, अनी, नी परसर्ग भी (बकरी, | बाघिनि, साधिनी, महारानी, चोरनी)

	वचन व्यवस्था	पुल्लिंग ब.व. में 'ए' प्रत्यय - बेटा झ बेटे; स्त्रीलिंग ब. व. में 'याँ', 'एँ प्रत्यय, रोटी > रोटियाँ, किताब > किताबें	एँ, अन, इन प्रत्ययों का प्रयोग किताब झ किताबें, किताबन, रोटी झ रोटिन	एँ, न तथा न्हि प्रत्ययों का प्रयोग (i) एँ → बात झ बातें, (ii) न →लरिका झलरिकन, (iii) न्ह, न्हि - सबन्हि, जुवतिन्ह एँ, न तथा न्हि प्रत्ययों का प्रयोग (i) एँ → बात झ बातें, (ii) न →लरिका झलरिकन, (iii) न्ह, न्हि- सबन्हि, जुवतिन्ह
व्याकरण	क्रिया व्यवस्था			
	वर्तमानकाल	'ऊ' रूप → जाऊँ हूँ; 'व' रूप → जावे है!	त रूप → करत, उठत, जात	त रूप → करत, बैठत
	भूतकाल	'या' रूप → चल्या, गया, कर्‌या	औ रूप → कियौ, उठौ; न रूप लीना. दिनी	स रूप → कीन्हेसि; व रूप - आवा, जावा
	भविष्यकाल	'गा' रूप (द्वित्वीकृत) 'जाऊंग्गा'	ग रूप में करैगो; ह रूप → करिहैं , मरिहैं	ब रूप → जाब, चलब; ह रूप → करहिं, चलहिं
	सहायक क्रियाएँ	वर्तमान → ह, स → है, सै । भूत → या → होया भविष्य → गा → होवगा	वर्तमान- हु रूप (हैं/हौं); भूतकाल - तु रूप (हुतौ, हुती) भविष्य- 'ग' (होवैगो)	वर्तमान → ह - हऔं, आहि भूतकाल → भ → भएउ, भए, भइल द्य भविष्य → ब - होब, होबउ
	संज्ञार्थ क्रियाएँ	ण रूप - जाण, करण	न रूप - चलन, खेलन	बो, इबो - जाइबो
	कारक व्यवस्था			

	विभक्ति/परसर्ग	होते हैं	होते हैं	कहीं-कहीं नहीं होते, जैसे- "राम दरस द्य मिटि गई कलुषाई"
	कर्ता	ने, नै, ण	केवल भूतकालिक सकर्मक क्रिया में श्नेश, नै	कोई परसर्ग/विभक्ति नहीं
	कर्म	को, ने.	कु, कूँ, को	का, के, कूँ, कः
	संबंध	का, के, की, रा, रे, री	प्रायः का, के, को, कभी-कभी केर, केरा	केर, केरा, केंरे अत्यधिक प्रयुक्तः कहीं-कहीं का, के, की
	विशेषण व्यवस्था	आकारांत विशेषण विकारी हैंद्य (छोटा झ छोटी, छोटे) अन्य विशेषण अविकारी बने रहते द्य हैं, विशेषतः स्त्रीलिंग बहुवचन में पूर्णतरू अविकारी रहते हैं, जैसे- मोटी लडकी झ मोटी लडकियाँ (मोटियाँ लडकियाँ नहीं)	विशेषण विशेष्यानुसार विकारी होते हैं, जैसे- कालो छोरो > काली छोरी, काले छोरे	विशेषण प्रायः अविकारी बने रहते हैं, जैसे- छोट लरकवा, छोट बिटिया

प्रमुख आधुनिक आर्यभाषाओं की विशेषताएँ	
लहँदा	• अन्य नाम- हिंदकी, जटकी, मुल्तानी, चिभाली, पोठवारी • लिपि- लंडा (शारदा लिपि की एक उपशाखा) • लहँदा का शाब्दिक अर्थ शपश्चिमीश होता है ।
पंजाबी	• इसकी लिपि लंडा थी जिसमें सुधार कर गुरु अंगद ने द्य गुरुमुखी लिपि बनाई । • मुख्य बोलियाँ - माझी, डोगरी, दोआबी, राठी आदि ।
सिंधी	• यह सिंधु नदी के दोनों किनारों पर बोली जाती है । • इसकी अपनी लिपि शलंडाश है, लेकिन यह गुरुमुखी और फारसी में भी लिखी जाती है । • बोलियाँ- विचोली, लासी, सिराइकी, थरेली, लाडी ।
गुजराती	• इसकी लिपि गुजराती के नाम से ही जानी जाती है। गुजराती कैथी से मिलती-जुलती लिपि में लिखी जाती है । इसमें शिरोरेखा नहीं ।
मराठी	• बोलियाँ- कोंकणी, नागपुरी, कोष्टी, माहारी। • लिपि देवनागरी है किंतु कुछ लोग शमोडीश लिपि का । • प्रयोग भी करते हैं ।
टसमी	• मुख्य बोली विश्नुपुरिया और लिपि बंगला है ।
बांग्ला	• बांग्ला प्राचीन देवनागरी से विकसित लिपि बंगला में लिखी जाती है ।
उडिया	• उडिया प्राचीन उत्कल तथा उडीसा की भाषा है । • उडिया की लिपि ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित लिपि है । • प्रमुख बोलियाँ- गंजामी, सम्भलपुरी, भत्री आदि ।

हिंदी की उपभाषाएँ तथा बोलियाँ			
अपभ्रंश	उपभाषा	बेली	क्षेत्र
शौरसेनी	राजस्थानी हिंदी टवर्ग बहुला,	मारवाडी	जोधपुर, अजमेर, मेवाड, सिरोही, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, चुरू, नागौर, पाली, जालौर बाडमेर, पाकिस्तान के सिंध प्रांत के पूर्वी भाग में
		मालवी	उज्जैन, इंदौर, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद, प्रतापगढ, गुना, नीमच, टोंक
		मेवाती	अलवर, गुडगाँव, भरतपुर
		जयपुरी/ढूंढाणी	हाडौती, कोटा, बूंदी, बारन, झालावाड
	पहाडी हिंदी	कुमाउँनी	नैनीताल, अल्मोडा, पिथौरागढ
		गढवाली	गढवाल, टिहरी, चमोली, उत्तरकाशी के आसपास के क्षेत्र

	पहाडी हिंदी	[ओकार बहुला]	ब्रजभाषा	उत्तर प्रदेश रू मथुरा, आगरा, अलीगढ, मैनपुरी, एटा, बदायूँ, बरेली मध्य प्रदेश रू ग्वालियर का पश्चिमी भाग । राजस्थान रू भरतपुर, करौली, धौलपुर, जयपुर का पूर्वी भाग
			कन्नौजी	फर्रुखाबाद, कानपुर, हरदोई, पीलीभीत, इटावा, शाहजहाँपुर
			बुंदेली	झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, छत्तरपुर, सागर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, नरसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद
		आकार बहुला,	कौरवी/खडी बोली	रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, सहारनपुर, देहरादून, अम्बाला, मुजफ्फरनगर, पटियाला के पूर्वी भाग
			हरियाणवी	दिल्ली, कुरुक्षेत्र, करनाल, जिन्द, हिसार, रोहतक, नाभा, पटियाला
			दक्खिनी	अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, बरार, मुम्बई
अर्धमागधी	पूर्वी हिंदी		अवधी	अयोध्या, लखनऊ, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, सीतापुर, उन्नाव, फैजाबाद, सुल्तानपुर रायबरेली, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ, बाराबंकी
			बघेली	मध्य प्रदेश रू दमोह, जबलपुर, रीवा, मुंडला, बालाघाट बघेली उत्तर प्रदेश रू बाँदा, फतेहपुर, हमीरपुर आदि जिलों के कुछ भागों में
			छत्तीसगढी	सरगुजा, बिलासपुर, रायगढ, दुर्ग, नंदगाँव, काँकेर, रायपुर, खैरागढ, कोरिया
मागधी	बिहारी हिंदी		भोजपुरी	उत्तर प्रदेश रू वाराणसी, गाजीपुर, देवरिया, बलिया, आजमगढ, महाराजगंज, मऊ, चंदौली, संत कबीरनगर, सोनभद्र, कुशीनगर (पडरौना), जौनपुर, मिर्जापुर, बस्ती जिले का पूर्वी भाग बिहार रू छपरा, सिवान, गोपालगंज, भोजपुर, भभुआ, रोहतास, सासाराम, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण। झारखंड रू राँची, पलामू

			मगही	बिहार रू पटना, गया, मुंगेर, जहानाबाद, नालंदा, नवादा, जमुई, शेखपुरा, औरंगाबाद, लखीसराय, भागलपुर झारखंड रू पलामू, हजारीबाग
			मैथिली	पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया, उत्तरी संथाल परगना, माल्दह घ दिनाजपुर, तिरहुत सबडिविजन की सीमा के पार नेपाल की तराई में

हिन्दी भाषा की ध्वनि व्यवस्था

अयोगवाह ध्वनियाँ

ये वे ध्वनिया हैं, जो न स
वर है। और न ही व्यंजन हैं । ऐसी तीन ध्वनियाँ –

1. अनुस्वार
   अनुस्वार एक नासिक्य ध्वनि है, यह अपने से बाद आने वाले व्यंजन के वर्ग का ही पाँचवा व्यंजन होगा ।
2. अनुनासिक
   वह नासिक्य ध्वनि जो स्वर के साथ जोडकर बोली जाती हैं ।
3. विसर्ग
   वह ध्वनि हैं, जो कुछ तत्सम शब्दों में स्वर के बाद 'ह' रूप में उच्चारित होती हैं ।

हिन्दी भाषा में शब्द व्यवस्था

स्त्रोत (उत्पत्ति) की दृष्टि से शब्दों के चार प्रकार हैं –

(i) तत्सम शब्द – जिन्हे संस्कृत से उसी रूप में लिया गया है, जैसे वे संस्कृत में मिलते हैं ।
(ii) तद्भव शब्द – जो शब्द कुछ परिवर्तन के साथ हिन्दी में लिये गए हैं ।
(iii) देशज शब्द – वे शब्द जिनका जन्म देश में ही हुआ हैं ।
(iv) विदेशज शब्द – ऐसे शब्द जो सांस्कृति आदान–प्रदान की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा में स्वीकार किये गए हैं ।

मानक हिन्दी की व्याकरण रचना

किसी भाषा में निहित व्यवस्था उसके व्याकरण पर निर्भर होती हैं । व्याकरण का अध्ययन चार भागों में किया जाता हैं –

पद संरचना

पद के दो प्रकार – विकारी और विकारी विकारी पदो में शामिल –

(i) संज्ञा – किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम व्यक्त करने वाला पद ।
   संज्ञा के तीन भेद –
   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
   2. जातिवाचक संज्ञा
   3. भाववाचक संज्ञा
(ii) सर्वनाम– संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।